

## शम्भुआ का एक प्राचीन शिव मंदिर

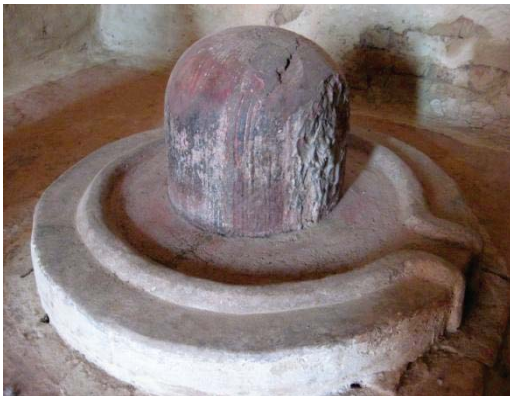
पूर्णन्दु सहाय  
ब्रम्हावर्त रिसर्च इन्सटीट्यूट

The famous Archaeologist Cunnigham has mentioned about two temples one at Rar about 5 kos to the south, and one at Simbhua some 3 kos west of Bhitargaon. This buildings I have not been able to visit in course of my tour (ASR, Vol. XI p.47) the temple of Rar and Simbhua were inspected by Mr. Longhurst, who did not consider that they posses any particular archaeological interest. ASI, AR 1908-09 p.18)।



शम्भुआ गाँव (Latitude-80.22, Longitude-26.26) तहसील घाटमपुर जिला कानपुर नगर में स्थित है। शम्भुआ गाँव रिन्द नदी के किनारे पर है। शम्भुआ नाम शम्भू या शिव के नाम के कारण पड़ा है। शम्भुआ गाँव कानपुर से घाटमपुर जाते हुए सड़क के दाहिने हाथ की ओर पड़ता है। शम्भुआ का शिव मंदिर आज जीर्ण शीण अवस्था में होते हुए भी अपने पुराने वैभव को दर्शाता है।

यहाँ पर जाने के लिए कानपुर—घाटमपुर रोड पर बड़ा चौराहा (कानपुर) से लगभग 30 किमी० की दूरी है, तथा नौबस्ता से लगभग 20 किमी० की दूरी पर है। मुख्य मार्ग से अंदर की आर गाँव में पक्की सड़क मिलती है उसके बाद लगभग 300 मीटर खेतों के बीच पगडण्डी से जाते हैं। स्थानीय किमवदन्ती है कि जब दुनिया में छः महिने का दिन व छः महीने की रात हुयी थो तब इस मंदिर का भूतों ने बनाया था। प्रत्येक ग्रामीण व्यक्ति अपने दादा—परदादा से सुनी हुई बातें बताता है कि उन्हें भी अपने दादा—परदादा से यह कथा सुनी थी।



यह मंदिर सार्वजनिक है फिर भी रोज पूजा नहीं होती है। पूजा न होने के कारण मंदिर के अन्दर चमगादड़ों का वास हो गया है। किन्तु चैत माह के नवरात्र में यहां एक मेला लगता है और मंदिर के टीले से नीचे स्थित काली मंदिर में पूजा होती है। उन्हीं दिनों कुछ लोग शिव मंदिर में भी

पूजा कर लेते हैं। मन्दिर के गर्भ गृह में लाल पत्थर का शिवलिंग स्थापित है जिसकी ऊँचाई 12.5 इंच, गोलाई 43 इंच है। यह शिवलिंग एक तरफ से टूट रहा है। ऐसा लगता है कि अर्घा बाद में बनाया गया है क्योंकि वह सीमेन्ट का बना है।

डाक्टर आर०के० पाल पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, क्राइस्टचर्च कॉलेज कानपुर ने अपने सर्वे रिपोर्ट "South Panchala- A Study in Historical and Cultural Geography- p.83" में लिखा है कि "The village Shambhua situated at a distance of 8 kilometers west of Bhitargoan. The village is noted for an early medieval brick temple. The temple is thickly covered with plaster. Where the plaster has fallen some flowered designs are visible. The inner chamber is made of carved stones"



डा० पाल ने इस मध्यकालीन ईंटो का मंदिर माना है। 9वीं-10वीं शताब्दी के तरीके से बना यह मंदिर वर्तमान में 10 फीट ऊँचे टीले पर खेतों के बीच स्थित है। खेत को बढ़ाने के लालच में लोग टीले को छोटा करते जा रहे हैं। वर्तमान में टीले की लम्बाई-चौड़ाई दक्षिण में 50 फीट पश्चिम में 40 फीट उत्तर में 43 फीट तथा पूरब में 44 फीट है। मंदिर की लम्बाई 20 फीट, चौड़ाई 20 फीट तथा ऊँचाई 50 फीट। मंदिर के शिखर पर कभी कलश हुआ करता था। भीतर से मंदिर का आकार "कोनिकल शेप" में है। मंदिर के बाहरी भाग पर 2 से 2½ इंच मोटा प्लास्टर चढ़ा हुआ है जो कई जगह से टूट कर गिर गया है। ऐसा लगता है कि जैसे किसी क्षत्रिय ढनाड्य व्यक्ति ने प्लास्टर चढ़वाया है। इस प्लास्टर के कारण ही मंदिर आज भी बहुत हद तक सुरक्षित खड़ा है। प्लास्टर के कई स्थानों पर गिर जाने के कारण मंदिर की ईंट दिखाई पड़ती है एवं उन ईंटो का साइज 14"x8"x2.5" है। प्लास्टर कारण मंदिर आज भी सुरक्षित है। मंदिर के उत्तर-पश्चिम जोड़ पर दरार आ गया है जिसके कारण इमारत की स्थिति बहुत ही दयनीय हो रही है।



मंदिर से पूरब में लगभग 100 मीटर की दूरी पर खेत में एक पुराना सूखा हुआ कुआ है मंदिर की तरह डिजाइनदार ईंटे लगी हुई हैं। मंदिर से ही पूरब में लगभग 200–250 मीटर की दूरी पर एक ऊँचा टीला है जिसे स्थानीय लोग गढी कहते हैं। इस टीले की खुदाई में ग्रामिणों को निश्चित रूप से कुछ पुराने बर्तन एवं सिक्के आदि मिले हैं, ऐसा वहां के लोग बताते हैं। जिसका वे खुलकर वर्णन नहीं करते। यदि इस टीले की खुदाई वैज्ञानिक रूप से की जाये तो निश्चित रूप से इस क्षेत्र के प्राचीन इतिहास की जानकारो होने की संभावना है।